

14 Important Characteristics of a Partnership Firm

14 Important Characteristics of a Partnership Firm

(i) Association of Two or More Persons:

In partnership there must be at least two persons. Partnership is the outcome of a contract, so there must be two or more persons. The persons becoming partners must be competent to enter into a contract. Minors cannot form a partnership firm as they are incompetent to enter into a contract.

According to section 11 of Contract Act, there is no maximum limit on partners in Partnership Act, but according to Companies Act, the maximum number of partners engaged in a banking business cannot exceed ten and twenty in any other business.

(ii) Contractual Relation:

The person joining the partnership enters into a contract for running the business. According to Partnership Act, the relation of partnership arises from contract and not from status. The contract may be oral or written but in practice written agreement is made because it helps to settle the disputes if they arise later on.

(iii) Earning of Profits:

The purpose of the business should be to make profits and distribute them among partners. If a work is done for charity purposes or to serve the society it will not be called partnership. So the motive of the business should be to earn profits. It does not mean that there will not be losses but the motive should be earning of profits.

(iv) Existence of Business:

Partnership can only be for some kind of business. The term 'Business' includes any trade, profession or occupation. By business we mean all activities concerning production, distribution and rendering of services for the purpose of earning profits. If the work is related to social service, we do not call it a business and hence no partnership.

(v) Implied Authority:

There is an implied authority that any partner can act on behalf of the firm. The business will be bound by the acts of partners.

(vi) Unlimited Liability:

As in the case of a sole-trade business liability of the partners of a firm is unlimited. In case some obligation arises then not only the partnership assets but also the private property of the partners can be taken for the payment of liabilities of the firm to the third parties. The creditors can claim their dues from anyone of the partner or from all the partners. The partners are liable individually and collectively.

(vii) Principal and Agent Relationship:

In partnership the relationship of Principal and Agent exists. It is not necessary that all partners should work in the business. Any one or more partners can act on behalf of other partners. Each partner is an agent of the firm and his activities bind the firm. He also acts as a principal because he is bound by the activities of other partners.

(viii) Utmost Good Faith:

The very bases of the partnership business are good faith and mutual trust. Every partner should act honestly and give proper accounts to other partners. The partnership cannot run if there is suspicion among partners. It is very important that partners should act as trustees and for the common good of all. Distrust and suspicion among partners lead to the failure of many firms.

(ix) Restriction and Transfer of Share:

No partner can sell or transfer his share to anybody else without the consent of the other partners. In case any partner does not want to continue in the partnership, he can give a notice for dissolution of the firm.

(x) Common management:

Every partner has a right to take part in the running of the business. It is not necessary for all partners to participate in the day-to-day activities of the business but they are entitled to participate. Even if partnership business is run by some partners, the consent of all other partners is necessary for taking important decisions.

(xi) Partners and Partnership are one:

A partnership firm has no separate entity from the partners. A firm is only a name to the collective name of partners. No firm can exist without partners. The rights and liabilities of partners are the rights and liabilities of the firm. Partners have implied authority to bind the firm for their acts.

(xii) Capital Contribution:

The partners contribute to the capital of the firm. It is not necessary to have capital in profit sharing ratio. A partner can be admitted to the firm even without

contributing to the capital. It is not essential that all partners must contribute to the firm's capital.

(xiii) Protection of Minority Interest:

All important decisions are generally taken by concerns. It ensures protection of those who may not agree to the majority view point. A partner may even ask for the dissolution of partnership if he feels aggrieved.

(xiv) Continuity:

There is no true limit for the continuity of a partnership firm. It goes on only upto the time the partners want it to go. Any misunderstanding among partners, death or insolvency of a partner may dissolve the partnership. Dissolution

Dissolution of partnership does not necessarily mean dissolution of the firm.

14 साझेदारी फर्म के महत्वपूर्ण लक्षण

14 साझेदारी फर्म के महत्वपूर्ण लक्षण

(i) दो या दो से अधिक व्यक्तियों का संघ:

साझेदारी में कम से कम दो व्यक्ति होने चाहिए। साझेदारी एक अनुबंध का परिणाम है, इसलिए दो या दो से अधिक व्यक्ति होने चाहिए। भागीदार बनने वाले व्यक्तियों को अनुबंध में प्रवेश करने के लिए सक्षम होना चाहिए। अवयस्क एक साझेदारी फर्म नहीं बना सकते क्योंकि वे अनुबंध करने में अक्षम हैं।

अनुबंध अधिनियम की धारा 11 के अनुसार, भागीदारी अधिनियम में भागीदारों की कोई अधिकतम सीमा नहीं है, लेकिन कंपनी अधिनियम के अनुसार, बैंकिंग व्यवसाय में लगे भागीदारों की अधिकतम संख्या किसी अन्य व्यवसाय में दस और बीस से अधिक नहीं हो सकती है।

(ii) संविदात्मक संबंध:

साझेदारी में शामिल होने वाला व्यक्ति व्यवसाय चलाने के लिए एक अनुबंध में प्रवेश करता है। साझेदारी अधिनियम के अनुसार, साझेदारी का संबंध अनुबंध से उत्पन्न होता है न कि स्थिति से। अनुबंध मौखिक या लिखित हो सकता है लेकिन व्यवहार में लिखित समझौता किया जाता है क्योंकि यह बाद में उत्पन्न होने वाले विवादों को निपटाने में मदद करता है।

(iii) लाभ की कमाई:

व्यवसाय का उद्देश्य लाभ कमाना और भागीदारों के बीच वितरित करना होना चाहिए। यदि कोई कार्य परोपकार के उद्देश्य से किया जाता है या समाज की सेवा के लिए किया जाता है तो उसे साझेदारी नहीं कहा जाएगा। अतः व्यवसाय का उद्देश्य लाभ कमाना होना चाहिए। इसका मतलब यह नहीं है कि नुकसान नहीं होगा लेकिन मकसद मुनाफा कमाना होना चाहिए।

(iv) व्यवसाय का अस्तित्व:

पार्टनरशिप किसी तरह के बिजनेस के लिए ही हो सकती है। 'व्यवसाय' शब्द में कोई भी व्यापार, पेशा या व्यवसाय शामिल है। व्यवसाय से हमारा तात्पर्य लाभ कमाने के उद्देश्य से उत्पादन, वितरण और सेवाओं के

प्रतिपादन से संबंधित सभी गतिविधियों से है। यदि कार्य समाज सेवा से संबंधित है, तो हम इसे व्यवसाय नहीं कहते हैं और इसलिए कोई साझेदारी नहीं है।

(v) निहित प्राधिकरण:

एक निहित अधिकार है कि कोई भी भागीदार फर्म की ओर से कार्य कर सकता है। व्यापार भागीदारों के कृत्यों से बाध्य होगा।

(vi) असीमित देयता:

जैसा कि एक एकल-व्यापार व्यवसाय के मामले में एक फर्म के भागीदारों की देयता असीमित होती है। यदि कुछ दायित्व उत्पन्न होता है तो न केवल साझेदारी की संपत्ति बल्कि भागीदारों की निजी संपत्ति को भी तीसरे पक्ष को फर्म की देनदारियों के भुगतान के लिए लिया जा सकता है। लेनदार किसी भी भागीदार या सभी भागीदारों से अपने बकाया का दावा कर सकते हैं। साझेदार व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से उत्तरदायी हैं।

(vii) प्रिंसिपल और एजेंट संबंध:

पार्टनरशिप में प्रिंसिपल और एजेंट का रिश्ता होता है। जरूरी नहीं है कि सभी पार्टनर बिजनेस में काम करें। कोई भी एक या अधिक भागीदार अन्य भागीदारों की ओर से कार्य कर सकते हैं। प्रत्येक भागीदार फर्म का एजेंट होता है और उसकी गतिविधियां फर्म को बांधती हैं। वह एक प्रमुख के रूप में भी कार्य करता है क्योंकि वह अन्य भागीदारों की गतिविधियों से बंधा होता है।

(viii) परम सद्भावना:

साझेदारी व्यवसाय का मूल आधार अच्छा विश्वास और आपसी विश्वास है। प्रत्येक साथी को ईमानदारी से कार्य करना चाहिए और अन्य भागीदारों को उचित हिसाब देना चाहिए। भागीदारों के बीच संदेह होने पर साझेदारी नहीं चल सकती है। यह बहुत महत्वपूर्ण है कि भागीदारों को ट्रस्टी के रूप में और सभी की भलाई के लिए कार्य करना चाहिए। भागीदारों के बीच अविश्वास और संदेह कई फर्मों की विफलता का कारण बनता है।

(ix) शेयर का प्रतिबंध और हस्तांतरण:

कोई भी भागीदार अन्य भागीदारों की सहमति के बिना अपना हिस्सा किसी अन्य को बेच या हस्तांतरित नहीं कर सकता है। यदि कोई भागीदार साझेदारी में बने रहना नहीं चाहता है, तो वह फर्म के विघटन के लिए नोटिस दे सकता है।

(x) सामान्य प्रबंधन:

प्रत्येक भागीदार को व्यवसाय चलाने में भाग लेने का अधिकार है। सभी भागीदारों के लिए व्यवसाय की दिन-प्रतिदिन की गतिविधियों में भाग लेना आवश्यक नहीं है, लेकिन वे भाग लेने के हकदार हैं। भले ही कुछ साझेदारों द्वारा साझेदारी व्यवसाय चलाया जाता है, महत्वपूर्ण निर्णय लेने के लिए अन्य सभी भागीदारों की सहमति आवश्यक है।

(xi) भागीदार और साझेदारी एक हैं:

एक साझेदारी फर्म की भागीदारों से अलग कोई इकाई नहीं होती है। एक फर्म भागीदारों के सामूहिक नाम का केवल एक नाम है। भागीदारों के बिना कोई फर्म अस्तित्व में नहीं हो सकती है। भागीदारों के अधिकार और दायित्व फर्म के अधिकार और दायित्व हैं। भागीदारों ने फर्म को उनके कृत्यों के लिए बाध्य करने का अधिकार निहित किया है।

(xii) पूंजी योगदान:

साझेदार फर्म की पूंजी में योगदान करते हैं। लाभ के बंटवारे के अनुपात में पूंजी का होना आवश्यक नहीं है। पूंजी में योगदान किए बिना भी एक भागीदार को फर्म में भर्ती किया जा सकता है। यह आवश्यक नहीं है कि सभी साझेदार फर्म की पूंजी में अंशदान करें।

(xiii) अल्पसंख्यक हितों का संरक्षण:

सभी महत्वपूर्ण निर्णय आम तौर पर चिंताओं से लिए जाते हैं। यह उन लोगों की सुरक्षा सुनिश्चित करता है जो बहुमत के दृष्टिकोण से सहमत नहीं हो सकते हैं। यदि कोई भागीदार व्यथित महसूस करता है तो वह साझेदारी के विघटन के लिए भी कह सकता है।

(xiv) निरंतरता:

साझेदारी फर्म की निरंतरता के लिए कोई वास्तविक सीमा नहीं है। यह तभी तक चलता है जब तक पार्टनर चाहते हैं कि यह चले। पार्टनर के बीच कोई गलतफहमी, पार्टनर की मौत या दिवालिया होने से पार्टनरशिप खत्म हो सकती है।

14 भागीदारी फर्मची महत्वाची वैशिष्ट्ये

14 भागीदारी फर्मची महत्वाची वैशिष्ट्ये

(i) दोन किंवा अधिक व्यक्तींची संघटना:

भागीदारीत किमान दोन व्यक्ती असणे आवश्यक आहे. भागीदारी हा कराराचा परिणाम आहे, म्हणून दोन किंवा अधिक व्यक्ती असणे आवश्यक आहे. भागीदार बनलेल्या व्यक्ती करारामध्ये प्रवेश करण्यास सक्षम असणे आवश्यक आहे. अल्पवयीन मुले भागीदारी फर्म तयार करू शकत नाहीत कारण ते करार करण्यास अक्षम आहेत.

करार कायद्याच्या कलम 11 नुसार, भागीदारी कायद्यामध्ये भागीदारांवर कमाल मर्यादा नाही, परंतु कंपनी कायदानुसार, बँकिंग व्यवसायात गुंतलेल्या भागीदारांची कमाल संख्या इतर कोणत्याही व्यवसायात दहा आणि वीसपेक्षा जास्त असू शकत नाही.

(ii) करार संबंध:

भागीदारीमध्ये सामील होणारी व्यक्ती व्यवसाय चालवण्यासाठी करारात प्रवेश करते. भागीदारी कायदानुसार, भागीदारीचा संबंध स्थितीतून नव्हे तर करारातून निर्माण होतो. करार तोंडी किंवा लेखी असू शकतो परंतु व्यवहारात लिखित करार केला जातो कारण ते नंतर उडूवल्यास विवाद सोडवण्यास मदत करते.

(iii) नफा मिळवणे:

व्यवसायाचा उद्देश नफा मिळवणे आणि ते भागीदारांमध्ये वाटणे हा असावा. एखादे कार्य धर्मादाय किंवा समाजसेवेसाठी केले जात असेल तर त्याला भागीदारी म्हणता येणार नाही. त्यामुळे व्यवसायाचा हेतू नफा कमावणे हा असावा. याचा अर्थ तोटा होणार नाही असा नाही तर नफा कमावण्याचा हेतू असावा.

(iv) व्यवसायाचे अस्तित्व:

भागीदारी फक्त काही प्रकारच्या व्यवसायासाठी असू शकते. 'व्यवसाय' या संज्ञेमध्ये कोणताही व्यापार, व्यवसाय किंवा व्यवसाय समाविष्ट आहे. व्यवसायाचा अर्थ नफा मिळविण्याच्या उद्देशाने सेवांचे उत्पादन, वितरण आणि प्रस्तुतीकरणाशी संबंधित सर्व क्रियाकलाप आहेत. जर काम समाजसेवेशी संबंधित असेल तर आम्ही त्याला व्यवसाय म्हणत नाही आणि म्हणून भागीदारी नाही.

(v) निहित प्राधिकरण:

कोणताही भागीदार फर्मच्या वतीने कार्य करू शकतो असा गर्भित अधिकार आहे. व्यवसाय भागीदारांच्या कृतीने बांधील असेल.

(vi) अमर्यादित दायित्व:

एकल-व्यापार व्यवसायाच्या बाबतीत फर्मच्या भागीदारांचे दायित्व अमर्यादित आहे. जर काही बंधने उद्ध्वली तर केवळ भागीदारी मालमत्ताच नाही तर भागीदारांची खाजगी मालमत्ता देखील तृतीय पक्षांना फर्मच्या दायित्वांच्या देयकासाठी घेतली जाऊ शकते. कर्जदार भागीदारांपैकी कोणाकडूनही किंवा सर्व भागीदारांकडून त्यांच्या देय रकमेचा दावा करू शकतात. भागीदार वैयक्तिकरित्या आणि एकत्रितपणे जबाबदार आहेत.

(vii) प्रिन्सिपल आणि एजंट संबंध:

भागीदारीमध्ये प्रिन्सिपल आणि एजंटचे नाते असते. व्यवसायात सर्व भागीदारांनी काम केले पाहिजे असे नाही. कोणतेही एक किंवा अधिक भागीदार इतर भागीदारांच्या वतीने कार्य करू शकतात. प्रत्येक भागीदार फर्मचा एजंट असतो आणि त्याचे क्रियाकलाप फर्मला बांधतात. तो प्राचार्य म्हणूनही काम करतो कारण तो इतर भागीदारांच्या क्रियाकलापांनी बांधील असतो.

(viii) अत्यंत सद्भावना:

भागीदारी व्यवसायाचा पाया म्हणजे सद्भावना आणि परस्पर विश्वास. प्रत्येक भागीदाराने प्रामाणिकपणे वागले पाहिजे आणि इतर भागीदारांना योग्य खाते दिले पाहिजे. भागीदारांमध्ये संशय असल्यास भागीदारी चालू शकत नाही. भागीदारांनी विश्वस्त म्हणून आणि सर्वांच्या सामान्य हितासाठी कार्य करणे अत्यंत महत्त्वाचे आहे. भागीदारांमधील अविश्वास आणि संशयामुळे अनेक कंपन्या अपयशी ठरतात.

(ix) निर्बंध आणि शेअरचे हस्तांतरण:

इतर भागीदारांच्या संमतीशिवाय कोणताही भागीदार आपला हिस्सा इतर कोणालाही विकू किंवा हस्तांतरित करू शकत नाही. जर कोणत्याही भागीदाराला भागीदारी चालू ठेवायची नसेल, तर तो फर्म विसर्जनाची नोटीस देऊ शकतो.

(x) सामान्य व्यवस्थापन:

प्रत्येक भागीदाराला व्यवसाय चालवण्याचा अधिकार आहे. सर्व भागीदारांनी व्यवसायाच्या दैनंदिन क्रियाकलापांमध्ये भाग घेणे आवश्यक नाही परंतु त्यांना सहभागी होण्याचा अधिकार आहे. जरी भागीदारी व्यवसाय काही भागीदारांद्वारे चालवला जात असला तरी, महत्त्वाचे निर्णय घेण्यासाठी इतर सर्व भागीदारांची संमती आवश्यक आहे.

(xi) भागीदार आणि भागीदारी एक आहेत:

भागीदारी फर्मला भागीदारांपासून वेगळे अस्तित्व नसते. फर्म हे भागीदारांच्या सामूहिक नावाचे फक्त एक नाव आहे. भागीदारांशिवाय कोणतीही फर्म अस्तित्वात असू शकत नाही. भागीदारांचे हक्क आणि दायित्वे

हे फर्मचे हक्क आणि दायित्वे आहेत. भागीदारांना त्यांच्या कृत्यांसाठी फर्मला बंधनकारक करण्याचा अधिकार निहित आहे.

(xii) भांडवली योगदान:

भागीदार कंपनीच्या भांडवलात योगदान देतात. नफ्याच्या वाटणीच्या प्रमाणात भांडवल असणे आवश्यक नाही. भांडवलात योगदान न देताही भागीदाराला फर्ममध्ये प्रवेश दिला जाऊ शकतो. सर्व भागीदारांनी फर्मच्या भांडवलात योगदान देणे आवश्यक नाही.

(xiii) अल्पसंख्याकांच्या हिताचे संरक्षण:

सर्व महत्त्वाचे निर्णय सामान्यतः चिंतेने घेतले जातात. जे बहुसंख्य दृष्टिकोनाशी सहमत नसतील त्यांचे संरक्षण सुनिश्चित करते. जोडीदाराला व्हाईट वाटत असल्यास तो भागीदारी विसर्जित करण्यास सांगू शकतो.

(xiv) सातत्य:

भागीदारी फर्मच्या निरंतरतेसाठी कोणतीही वास्तविक मर्यादा नाही. भागीदारांना ते जायचे आहे तोपर्यंतच ते चालू होते. भागीदारांमधील कोणताही गैरसमज, भागीदाराचा मृत्यू किंवा दिवाळखोरी भागीदारी विसर्जित करू शकते.

=====